ISBN Number: 978-93-342-7211-6 (Book)
ISSN 2229-547X (online)

विदेह ४१६ म अंक १५ अप्रैल २०२५ (वर्ष १८ मास २०८ अंक ४१६)

[विदेह (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) www.videha.co.in]



विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्



विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर।



Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

Font/ Keyboard Source: https://fonts.google.com/ , https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts , https://keyman.com/

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

Cover designed by AUM GAJENDRA THAKUR

Videha e-Journal: Issue No. 416 at www.videha.co.in

समानान्तर परम्पराक विद्यापति- *चित्र विदेह सम्मानसँ सम्मानित श्री पनकलाल मण्डल द्वारा*

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत्। हनुमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्।

अनक्रुम

ऐ अंकमे अछि:-

३.३.डॉ. जियाउर रहमान जाफरी- दूटा कविता- मृतक/ पुरुषक समस्या

(पष्ठ ४२-४४)



गद्य

२.१.कल्पना झा-मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-७



कल्पना झा

मथिली साहित्यम उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एव हुनक परिवारक योगदान-७

जनक सन सफल गहृस्थ : 'व्यास' जी'

मैथिली अकादमी द्वारा साल 2020 मे मैथिलीक वरेण्य रचनाकार, गीतकार प्रदीपक मृत्युपरान्त "मैथिली पुत्र प्रदीप स्मृति अंक"क घोषणा कएल गेल छलए जे ओही साल दिसम्बर मे प्रकाशित भेल। एहि "मैथिली पुत्र प्रदीप स्मृति अंक" मे हमरहु छोट - सन श्रद्धांजलि लेख प्रकाशित भेल छलए, जे कोनो पत्रिका मे प्रकाशित हमर 'पहिल' लेख अछि। आ तँ ओ पत्रिका हमरा अति प्रिय अछि। सम्हारि क' राखल अछि घर मे। रहरहाँ कोनो सर-कुटुम्ब पटना अएलाह तँ हुनका पढ़बालेल, देखबालेल देलहुँ, ई सभ बचकाना हरकत करैत रहलहुँ। ओना ओ अंक वास्तव मे संग्रहणीय अछि। मात्र बारह गोट लेख

केर संकलन सँ युक्त एहि अंक कैँ पढ़ि प्रदीप जीक व्यक्तित्व ओ कृतित्वक सभ आयाम सं ँ परिचित भ' सकैत छथि पाठकगण।

एहि "मैथिली पुत्र प्रदीप स्मृति अंक" मे सियाराम झा 'सरस' जी बड़ा बढ़ियाँ सँ हुनकर व्यक्तित्वक विविध आयाम कैँ चारि भाग मे विभक्त क' पाठकक सोझाँ रखलनि अछि। शिक्षक प्रदीप, पारिवारिक प्रदीप, सामाजिक प्रदीप आ कवि प्रदीप। ई वर्गीकरण करब सुविधाजनक बुझना गेल, पाठकक लेल सेहो आ लेखकक लेल सेहो।

तँ से एही तर्ज पर हम आइ गृहस्थ 'व्यास' जीक चर्चा करबाक नेआर कएल अछि। वस्तुत: गृहस्थ 'व्यास' जीक नहि; जनक सन सफल गृहस्थ 'व्यास' जीक चर्चा करबाक अछि। एखन धरि क्रमवार नेना उपेन्द्र सँ ल' क' युवा उपेन्द्र आ लेखक उपेन्द्रक व्यक्तित्व-निर्माणक प्रकरणे टाक गप्प कएल अछि। उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' जीक व्यक्तिगत पारिवारिक जीवनक चर्चा करब रहि गेल। उपरोक्त भूमिका बान्हब आवश्यक नहि छलए प्रायः। खैर, जे-से। आब बान्हि देल तँ बान्हि देल।

'व्यास' जी गृहस्थ-जीवन मे प्रवेश कएलनि 1946 ई. मे उनतीस बरखक अवस्था मे। ताहि दिन जखन बेसी-सँ-बेसी मैट्रिक वा इंटरमीडिएट धरि पढ़ैत-पढ़ैत वरक विवाह भ' जाइत रहैक; ताहि समय मे उनतीस बरखक अवस्था मे विवाह करब अजगुत बला बात लगतनि लोक कैँ। भव्य मुख-मण्डलक, देखनुक, प्रतिभाशाली युवा उपेन्द्र नाथक नीक रिजल्ट सेहो रहलनि सभदिन; स्कूल सँ कॉलेज धरि...तखन एतेक विलम्ब किऐक ? एकर पाछाँ एकटा रहस्यमूलक घटना अछि।

असल मे एहि रहस्यक संबंध अछि हस्तरेखा सँ। रमानाथ बाबू सभ भाए हाथ

देखबा मे पारंगत छलाह। राँची मे हुनक भाइ बोध नाथ जी सँ 'व्यास' जीक बड़ घनिष्ठता रहनि। ओ तँ एकदम एक्सपर्ट ! शचीनाथ जी सेहो हस्तरेखाक ज्ञाता छलाह। विशेषज्ञे बुझू ! एक दिन हुनकर तरहत्थी पर अपन तरहत्थी राखि देलथिन 'व्यास' जी। कहलथिन, "हमर हाथ देखू !"

जेना होइत छैक, हाथ देखबैत काल; नौकरी, मान-सम्मान, परीक्षाफल, घर-घराड़ी, यश आ तकर बाद लजाइत-सन 'व्यास' जी पुछलथिन - हमर विवाह ? ... शचीनाथ जी हुनकर दहिना हाथक तरहत्थीक रेखा कैं विभिन्न कोण सँ देखए लगलथिन - एक अंगुरीक दूरी कैं भजियौलनि आ तखन गम्भीर मुखाकृति कएने बाजि उठलाह - व्यास ! अहाँकें दूटा विवाह होएत । 'व्यास' जी सन्न रहि गेलाह । हतप्रभ । विस्मित आ स्तब्ध !

कनि कालक बाद शचीनाथजी कैं अभिरोष भरल मुद्रा मे कहलथिन - "एना नहि भ' सकैत छैक... अहाँ फेर सँ गणना देखिऔक ....फेर सँ गणना करिऔक।"

शचीनाथ जी फेर सँ देखलथिन, फेर सँ गणना कएलनि आ तखन पुनः गम्भीर मुखाकृति कएने बजलाह - "व्यास ! अहाँ कें दू टा विवाह तँ निश्चित होएत !"

तखन 'व्यास' जी एहि दू विवाह सँ बचबाक तोड़ ताकबा पर फोकस कएलनि। शचीमाथ जी सँ पुछलथिन, "बढिञा सँ गणनाक उपरान्त कहू जे हमर पहिल विवाह कोन अवस्था मे होएत ?" शचीनाथ जी पुनः तरहत्थीक रेखा कैं विभिन्न कोण सँ देखए लगलाह । एक अंगुरी आ दोसर अंगुरीक दूरीक गणना कएल आ तखन कहलथिन - "तइसम बरखक अवस्था मे व्यास ! अहाँक पहिल वियाह तइसम बरख मे होएत !"

एहि भविष्यवाणीक प्रभाव 'व्यास' जीक मनःस्थिति पर केहन आ कतेक पड़ल हेतनि, से कहबाक बेगरता नहि।

एकदम बेचैन भ' गेलाह। गंगाकात घुमैत-रहलाह.... एकांत मे...। दिमाग शून्य सन लागए लगलनि .... अन्हार भ' गेलाक बाद, बहुत राति बितलाक बाद 'व्यास' जी होस्टल आपस अएलाह । ओही राति निर्णय लेलनि जे "हम तइसम बरखक अवस्थाक बादे विवाह करब ।"

तइसम समाप्त भ' जाएत तखन पहिल विवाहक कोनो अर्थ नहि रहि जाएत, से सोचि ई निर्णय लेलनि। आ से तइसम बितलाक बादहु, चौबीसम पचीसम मे के कहए उनतीसम बरख मे विवाह कएलनि। बेस ! विवाह भेलनि आ एकटा प्रतिष्ठित घरक खूब बुधियारि, सभ लूड़ि-व्यवहार मे दक्ष, बहुत नीक ज्ञान-बुद्धि सँ युक्त जीवनसंगिनीक पदार्पण भेलनि 'व्यास' जीक जीवन मे। 'देर आए दुरुस्त आए' बला बात चरितार्थ होइत सन प्रतीत भेलैक लोक कैँ।

'व्यास' जीक धर्मपत्नीक नाम अमरावती देवी छलनि। पुकारू नाम हीरा दाइ। अथरी (बेलसंड) जिला-सीतामढ़ीक पं. टेकनाथ मिश्रक सुपुत्री। पं. टेकनाथ मिश्र डिस्ट्रिक्ट जजक रुप मे अवकाश ग्रहण कएने छलाह। पहिल मैथिल ब्राह्मण जज छलाह ओ ।

कालक्रमेण 'व्यास' जीक गृहस्थीक गाड़ी रफ्तार पकड़ैत गेलनि। गृहस्थाश्रम नमहर होइत गेलनि। गृहस्थी मे नब-नब सदस्यक आगमन होइत गेलनि। उनतीस जून 1960 ई. धरि 'व्यास' जी पाँच गोट पुत्र आ एक गोट पुत्रीक पिता बनि चुकल छलाह।

दोसर दिस उपेन्द्र नाथ जीक अनुज महेन्द्र नाथ सेहो गृहस्थ जीवन मे प्रवेश कएलथिन। दुनू भाएक धिया-पूता एकतुरिए सन। अनुज महेन्द्र तीन गोट पुत्र आ तीन गोट पुत्रीक पिता बनलाह। दुनू भाएक कुल बारह गोट संतान सभ कैँ देखि पितामही आनन्दी देवीक करेजा सूप सन होइत रहैत छलनि। अपन तेरह गोट संतान मे सँ मात्र दू टा बालक उपेन्द्र आ महेन्द्र बचलथिन। से एहि दुनू भाएक संतान सभ सँ भरल घर देखि आनन्दी देवीक आनन्दक पारावार नहि रहनि।

कर्मकाण्डक अनुसरण कएनिहार 'व्यास' जी भोर-साँझ सभ धिया पूता कैँ अपना संग बैसाए संस्कृतक श्लोकादिक नियमित पाठ करबैत छलाह। स्वयं सभदिन अनुशासित रहए बला पिता अपन संतान सभ कैँ अनुशासनक महत्व, अनुशासनक पाठ पढ़ाएब सभ सँ जरूरी बुझलनि। जे बात नैतिक शिक्षाक पोथी मे पढ़ैत छलहुँ हमसभ, से श्री भवन ('व्यास' जीक पटना स्थित आवास) जाइ तँ प्रत्यक्ष देखबालेल भेटए। प्रातःकाल सूति क' उठितहि सभ धिया-पूता अपन माता-पिताक चरणस्पर्श करथि। फूसि नहि कहब, हमसभ एना कहियो नहि कएलहुँ। बस जाहि दिन कोनो परीक्षा रहैत रहए, ताहि दिन चरणस्पर्श करियनि हमसभ भाए-बहिन अपन माता-पिताक।

ओना अत्यधिक अनुशासन मे राखब धिया-पूताक भीतर एकटा विद्रोही भाव सेहो आनैत छैक। कखनोकाल डॉमिनेटिंग नेचर वा हुनकर श्रेष्ठताक भाव सँ घरक लोक त्रस्त सन अनुभव करैत छलाह। धिया-पूता पर शासन करब सेहो एक सीमे धरि उचित छैक ने ! ओना आबक समय तँ एकदम्मे बदलि गेल अछि, मुदा ताहू दिनक हिसाबेँ किछु बात-व्यवहार खटकए बला होइत रहलनि। कोनहुँ मनुष्य सर्वगुणी होएत वा सभ कैँ प्रसन्न राखि लेत, से संभवो नहि छैक। ई एकटा कटु सत्य अछि।

गृहस्थ जीवनक आधार छैक धर्म, अर्थ, काम आ मोक्ष। ई बात बूझल तँ सभकेँ रहैत छैक; मुदा बुझने की....जीवन मे उतारैत छथि बड़ थोड़ लोक। से 'व्यास' जी तेहन गृहस्थ मे सँ छथि, जे धर्मक पालन करैत, धर्मक अनुसरण करैत अर्थोपार्जन कएलनि। धिया-पूता केँ नीक शिक्षा-दीक्षा, नीक संस्कार दैत अपन जिम्मेवारीक निर्वहन कुशलतापूर्वक कएलनि। अपने टा नहि, अनुज महेन्द्र नाथ झाक धिया-पूताक पढाइ-लिखाइ सँ ल' क' विवाह-दान धरि सभटा जिम्मेवारी 'व्यास' जी स्वयं निर्वहन कएलनि। अनमन राजा जनक सन। जहिना राजा जनक दू भाए, तहिना 'व्यास' जी सेहो। बहुत समानता देखाइत अछि जेना। न्यायप्रिय आ धार्मिक शासक जनक केर वास्तविक नाम सीरध्वज छलनि। सीरध्वज आ कुशध्वज दुनू भाए मे चारि गोट कन्या सीता, उर्मिला, मांडवी आ श्रुतकीर्ति। चारूक विवाहक कर्तव्य जहिना राजा जनक निभओने छलाह, तहिना 'व्यास' जी सेहो एकटा अपन आ तीन गोट अनुजक धियाक कन्यादान क' अपन जिम्मेवारीक निर्वहन काएलनि। आ से सहर्ष कएलनि।

कन्यादाने टा नहि, पारिवारिक अन्यान्य काज-प्रयोजनक बात-व्यवस्थाक सभटा भार रहलनि 'व्यास' जी पर। धर्मक बाट धएने, शास्त्र-पुराणक पालन करैत, देवता-पितरक प्रति श्रद्धा ओ सम्मान राखैत ब्राह्मण-भोजन, दानादि सभ किछु बड़ श्रद्धापूर्वक करैत छलाह ओ। यज्ञ, हवनादि मे सम्मिलित होएब, दान-पुण्य करब, माने एकटा गृहस्थ केर जतेक कर्तव्य छैक, से ओ कत्तहु रहलाह तँ तकर पालन कएलनि। राँची, सिन्दरी, गया, कइअक ठाम पोस्टिंग रहलनि। सभठाम सभ तरहक बात-व्यवस्था क' लैत छलाह।

पारिवारिक संग सामाजिक जिम्मेवारी सेहो कुशलतापूर्वक निभाबैत अपना संग-संग अपन कुल-खानदान केर मान-प्रतिष्ठा बढ़ौलनि। कत्तहु रहलाह,

अपन परिवारक अतिरिक्त पाँच-सात गोटे तँ सभदिन रहिते टा छलनि डेरा पर। केओ पढ़बाले माने विद्यार्थी सभ, केओ डागदर-वैद्यक फेरा मे रहल, केओ कोनो कार्यालयी काज सँ। आ ताहि पर सँ अतिथिक अवरजात। अतिथिक सम्मान आ स्वागत लेल जतबा 'व्यास' जी तत्पर रहैत छलाह ताहि सँ बेसी जीवनसंगिनी अमरावती देवी। पतिक मान-प्रतिष्ठाक ध्यान राखब पत्नीक धर्म छैक, से हुनका खूब नीक जकाँ बूझल छलनि। डिग्री भले ही बड़का-बड़का नहि छलनि, मुदा व्यावहारिक ज्ञान अद्भुत !

सेवा निवृत्तिक उपरान्त धर्म-कर्म, पूजा पाठ आरो बढ़ि गेल छलनि 'व्यास' जीक। मोक्षमार्ग पर चलबाक प्रयास रहल हेतनि प्रायः।ज्ञानक भंडार तँ छलनिहेँ। पौराणिक ग्रन्थ सभ तँ बाल्यकालहि सँ पढ़ैत रहल छलाह। हुनका नीक जकाँ बूझल छलनि जे ज्ञान आ कर्मक माध्यम सँ मोक्ष प्राप्तिक बाट खूजत। योग सेहो एहि प्रक्रियाक एकटा घटक अछि, सेहो बूझल छलनि। तँ से धर्म, कर्म, योग, अभ्यास सभ किछु हुनकर दिनचर्या मे सम्मिलित रहलनि, आजीवन।

'व्यास' जी सात्विक विचारधाराक लोक छलाह, से हुनकर सान्निध्य मे रहनिहार लोकसभ एहि बात सँ अनभिज्ञ नहि हेताह। सात्विक आहार-विहार-आचरण हुनकर व्यक्तित्व केँ एकटा विशिष्ट "औरा" प्रदान करैत छलनि, ई बात कतेको गोटेक मुहेँ सुनल अछि हमरा। आ से ई सात्विक आहारक परम्परा श्री भवन मे कायम रहल सभदिन।

सफल गृहस्थ जीवन जीबैत, पारिवारिक-सामाजिक सभ तरहक दायित्व केर सफलतापूर्वक निर्वहन करैत, मातृभाषाक भंडार केँ समय-समय पर अपन

लेखनी सँ सम्पुष्ट करैत रहलाह 'व्यास' जी। ई बहुत पैघ उपलब्धि कहल जाएत, हमरा हिसाब सँ।

संपादकीय सूचना-एहि सिरीजक पुरान क्रम एहि लिंकपर जा कऽ पढ़ि सकैत छी-

मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-1
मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-2
मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-3

मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-4

मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-5

मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-6

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.२.परमानन्द लाल कर्ण-तीर्थक्षेत्रक माहात्म्य-५



গতাঁক সঁ আগু ......

তীর্থক্ষেত্রক মাহাত্ম্য

(পদ্‌ম পুরাণ সৃষ্টি খণ্ড)

তকর বাদ ঋষি লোকনি সঁ প্রশংসিত প্রয়াগতীর্থক যাত্রা করী। জাহি ঠাম সাক্ষাত ভগবান মাধব বিরাজমান ছথি। গঁগা সব তীর্থক সঁগ প্রয়াগ এহীঠ অছি আ তীনু লোক মে বিখ্যাত ব সমস্ত জগত কেব পবিত্র করৈ বালী সূর্যনন্দিনী যমুনা গঁগাজীক সঁগ মিলল ছথি। গঁগা যমুনাক মধ্যক ভূমি পৃথ্বীক জঘন মানল গেল অছি। প্রয়াগ জঘনক বীচক উপস্থ ভাগ পব অছি, এহেন ঋষি লোকনিকক মান্যতা অছি। ওহি ঠাম প্রয়াগ, প্রতিষ্ঠানপুব, কম্বল আ অশ্বতব নাম সঁ নাগক স্থান অছি। ওহি ঠাম যজ্ঞ আ বেদ মূর্তিমান বহৈত ছথি। প্রয়াগ সঁ বেসী পবিত্র তীর্থ তীনু লোক মে নহি অছি। প্রয়াগ তীর্থ নাম শ্রবনাও, কীর্তন কবনাও আ প্রয়াগ নাম সঁ মাথ মৃকেলা সঁ লোকনি সব পাপ সঁ মুক্ত ভৈ জায়ত ছথি। জে কেও উত্তম ব্রতক পালন কবৈত সঁগম মে স্নান কবৈত ছথি, হুনকা মহান পুণ্য মিলৈত ছৈন; কিএক তঁ প্রয়াগ দেবতা লোকনিকক যজ্ঞভূমি অছি। ওহি ঠাম থোড়বস্ত দান মহান ফল দায়ক হোয়ত অছি। প্রয়াগ মে সাঠি কোটি দস হজার তীর্থক নিবাস স্থান বতাওল গেল অছি। চাক বিদ্যাক অধ্যয়ন সঁ জে পুণ্য মিলৈত অছি আ সত্যবাদী লোকনি কেব জে পুণ্য মিলৈত অছি, ও গঁগা যমুনাক সঁগম মে স্নান কবনা সঁ মিল জায়ত অছি। প্রয়াগ মে ভোগবতী নাম সঁ বীক বাবলী অছি, জেকবা বাসুকী নাগক বীক জগহ মানল গেল অছি। জে কেও ওহি ঠাম স্নান কবৈত ছথি, ও অশ্বমেধ যজ্ঞক ফল পাবৈত ছথি। ওহি ঠাম হংসপ্রপতন আ দশাশ্বমেধ নাম সঁ তীর্থ স্থল অছি। গঁগা মে কতঙ্গ স্নান কবনা পব কুরুক্ষেত্র মে স্নান কবনাক পুণ্য মিলৈত অছি।

গংগাজীক জল সমস্ত পাপ কেঁ ওহিনা ভস্ম কঽ দৈত অছি, জেনা কপাসক ঢের কে আগি জলা দৈত অছি। সতযুগ মে সব তীর্থ, ত্রেতা মে পুষ্কর, দ্বাপর মে কুরুক্ষেত্র আ কলিযুগ মে গংগা সবসঁ পবিত্র তীর্থ মানল গেল অছি। পুষ্কর মে তপ করী, মহালয মে দান দী আ দুগ্ধ-তর্ণ পর উপবাস করী তঽ বিশেষ পুণ্য হোযত অছি। পুষ্কর,কুরুক্ষেত্র আ গংগা জল মে স্নান করলা সঁ লোকনি অপন সাত পীঢ়ী আগু আ সাত পীঢ়ী পাছু কেঁ তারি দৈত অছি। গংগাজীক নাম লেলা মাত্র সঁ সব পাপ ধুলি জাযত অছি, দর্শন করলা পর কল্যাণ হোযত অছি আ স্নান করলা ব পানি পিলা সঁ সাত পীঢ়ী ধরি পবিত্র ভঽ জাযত অছি। জখন ধরি মানুষক হাড়ক সম্পর্ক বঁচল রহৈত অছি, তখন ধরি লোকনি সূক্ষ্মলোক মে প্রতিষ্ঠিত রহৈত অছি। ব্রহ্মাজীক কথন অছি জে গংগা সন তীর্থ, শ্রীবিষ্ণু সঁ বঢ়ি কে দেবতা আ ব্রাহ্মণ স বঢ়ি কে পূজা কোনো দোসর নহি অছি। জাহি ঠাম গংগা জী বহৈত ছথিন, ওনকা কছের মে জে-জে দেশ আ তপোবন অছি, ও সিদ্ধ ক্ষেত্র মান'ক চাহী।

যুধিষ্ঠির কে পুছলা পর মার্কণ্ডেয জী কহৈত ছথিন - বৎস! পূর্বকাল মে ঋষি আ ব্রাহ্মণ লোকনিকক মুঁহ সঁ জে কিছু সুনলহুঁ অছি, ও প্রযাগক ফল অহাঁক বতাবৈত ছী। প্রযাগ সঁ লঽ কে প্রতিষ্ঠানপুর ধরি, ধর্মক হ্রদ সঁ লঽ কে বাসুকিহ্রদ আ কম্বল ব অশ্বতর নাগক স্থল ব বহুমূলিক নাম সঁ নাগক স্থান ধরি প্রজাপতিক ক্ষেত্র অছি, জে তীন লোক মে বিখ্যাত অছি। এহি ঠাম স্নান করলা সঁ মনুষ্য সূক্ষ্মলোক জাযত ছথি আ জিনকর মৃত্যু হোযত অছি, ও ফেরি জন্ম নহি লৈত ছথি। প্রযাগ মে ব্রহ্মা আদি দেবতা এক ঠাম ভঽ জীবক রক্ষা করৈত ছথিন। ওহি ঠাম আওরো কতেকো তীর্থ স্থল অছি, জে সব পাপহারিণী আ কল্যাণকারিণী অছি। স্বযং ইন্দ্র বিশেষ রূপ সঁ প্রযাগ তীর্থক রক্ষা করৈত ছথিন আ ভগবান বিষ্ণু দেবতাক সঁগ প্রযাগক সর্বমান্য মণ্ডলক রক্ষা করৈত ছথিন। হাথ মে শূল লেনে ভগবান মহেশ্বর সব দিস সঁ ওহি ঠামক বটবৃক্ষক রক্ষা করৈত ছথিন আ দেবতা সমস্ত তীর্থস্থলক রক্ষা করৈত ছথিন। ও স্থান সব পাপক হব'বালা আ শুভ স্থান অছি। জে প্রযাগক স্মরণ করৈত অছি, ওনকর সব পাপ নষ্ট ভঽ জাযত অছি। ওহি তীর্থক দর্শন আ নাম কীর্তন সঁ আ ওহি ঠামক মাটি মিললা সঁ লোকনি সব পাপ সঁ মুক্ত ভঽ জাযত ছথি।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

करैत अछि, ओ गायक शरीर मे जेतेक रोँआ रहैत अछि ,ततेक हजार वर्ष धरि सूर्यलोक मे प्रतिष्ठित होयत अछि ।

जे केओ देवता सँ सेवित प्रयागतीर्थ मे बरद वा बैलगाडी पर चढि जायत अछि, ओ गायक क्रोध भेला पर नरक मे जायत छथि आ हुनक पितर हुनकर देल पानिओ नहि ग्रहण करैत अछि । जे केओ ऐश्वर्य आ मोहवश सवारी सँ तीर्थयात्रा करैत अछि, हुनका तीर्थ सेवनक कोनो फल नहि मिलैत अछि । जे गंगा यमुनाक बीच ऋषि लोकनिकक बताओल विधि आ अपन सामर्थ्यक अनुसार कन्यादान करैत अछि , ओ ताहि कर्मक प्रभाव सँ यमराज आ भयंकर नरक नहि देखैत छथि । जे केओ अक्षयवटक नीचा प्राण त्यागैत छथि, ओ सब लोक के नाँघि रुद्रलोक जायत छथि । ओहि ठाम रुद्रक आश्रय लऽ के बाँरह गोट सूर्य तपैत अछि आ समस्त जगत के जला दैत अछि ,मुदा वट जरि नहि जला पाबैत छथि । जखन सूरज,चान आ वायुक विनाश भऽ जायत अछि आ समस्त जगत एकार्णव भऽ जायत अछि , तखन भगवान विष्णु एहि अक्षयवट पर शयन करैत छथि । देवता , दानव ,गन्धर्व,ऋषि सिद्ध आ चारण सब गंगा यमुना मे स्थित तीर्थक सेवन करैत अछि । जाहि ठाम ब्रह्मा आदि देवता ,दिशा, दिक्पाल,लोकपाल,साध्य, पितर, सनत्कुमार आदि परमर्षि, अंगिरा आदि ब्रह्म ऋषि , नाग ,सुपर्ण चिड़ै, नदी, सागर, पर्वत ,विद्याधर आ साक्षात भगवान् विष्णु प्रजापति केर आग्र राखि रहैत छथि ।ओहि तीर्थक नाम सुनला,नाम लेला आ ओहि ठामक माटिक स्पर्श सँ लोकनि पाप मुक्त भऽ जायत अछि । जे केओ कठोर व्रतक पालन करैत संगम मे स्नान करैत अछि , ओ राजसूय आ अश्वमेध यज्ञ सन फल पाबैत अछि । योगयुक्त विद्वान लोकनि जाहि गति के पाबैत छथि, वएह गति गंगा आ यमुनाक संगम मे मरला पर लोकनि के होयत छैन ।

एहि प्रकार परमपदक साधनभूत प्रयागतीर्थक दर्शन कऽ यमुनाजीक दक्षिण बाँयी दिस जाय केर चाही, जाहि ठाम कम्बल आ अश्वतर नागक स्थान अछि । ओहि ठाम स्नान आ जलपान केला पर लोकनि सब पाप सँ छुटकारा पाबि दैत छथि । ओ परम बुद्धिमान महादेवक स्थान अछि । ओहि ठाम गेला सँ लोकनि अपन कुलक दश पीढि पूर्व आ दश पीढि आगुक उद्धार कऽ दैत अछि । जे केओ ओहि ठाम स्नान करैत छथि ,हुनका अश्वमेध यज्ञक फल मिलैत छैन आ ओ

প্রলযকাল ধরি সূক্ষ্মলোক মে জাযত ছথি । গঁগাক পূর্ব তীর লোক মে রিখ্যাত সমুদ্রকূপ আ প্রতিষ্ঠানপুর অছি । জে কেও ব্রহ্মচর্যক পালন করৈত ক্রোধ কে জীত তীন রাতি ওহি ঠাম ককৈত ছথি ,ও সর পাপ সঁ শুদ্ধ ভ২ অশ্বমেধ যজ্ঞক ফল পারৈত ছথি । প্রতিষ্ঠান সঁ উত্তর আ ভাগীরথী সঁ পূর্ব দিশি হঁসপ্রপতন নাম সঁ একটা তীর্থ স্থল অছি , জাহি ঠাম নহেলা সঁ অশ্বমেধ যজ্ঞক ফল মিলৈত অছি আ জখন ধরি সূরজ-চান রহৈত অছি তা ধরি সূক্ষ্মলোক মে ও প্রতিষ্ঠিত রহৈত ছথি ।

রমণীয অক্ষযরটক নীচা ব্রহ্মচারী,জিতেঁদ্রীয আ যোগযুক্ত ভ২ উপরাস করলা সঁ লোকনি কে ব্রহ্মজ্ঞান মিলৈত ছৈন । কোটিতীর্থ মে জাকে জিনকর মৃত্যু হোযত ছৈন , ও কোটি ররখ ধরি সূক্ষ্মলোক মে সম্মানিত হোযত ছথি । চারু রেদক অধাযন সঁ জে পুণ্য হোযত অছি , ষাঁচ রোললা সঁ জে ফল মিলৈত অছি আ অহিঁসা পালন সঁ জে ধর্ম হোযত অছি , ও দশাশ্বমেধ ঘাটক যাত্রা করলা সঁ মিল জাযত অছি । গঁগা মে কতহু স্নান কএল জায , ও কুরুক্ষেত্র সন ফল দৈত অছি ; মুদা জাহি ঠাম ও সাগর সঁ মিললৈত অছি ,ওহি ঠাম ওকর মাহাত্ম্য দস গুণা ভ২ জাযত অছি । মহাভাগ গঁগা জাহি ঠাম রহৈত ছথিন , ওহি ঠাম কতেকো তীর্থ আ তপস্বী রহৈত ছথিন । ওহি স্থান কে সিদ্ধ ক্ষেত্রক চাহী । এহি মে দোসর কোনো রিচার করক আরশ্যকতা নহি অছি । গঁগা পৃথ্বী পর মনুষ্য কে , পাতাল মে নাগ কে আ সূর্য মে দেরতা কে তারি দৈত ছথিন , তেঁ ও ত্রিপথগা কহারৈত ছথিন । কোনো জীরক হড্ডী জতেক সময গঁগা মে রহৈত অছি , ওতেক হজার ররখ ধরি ও সূক্ষ্মলোক মে সম্মানিত রহৈত ছথি । গঁগা তীর্থ মে শ্রেষ্ঠ তীর্থ ,নদী মে উত্তম নদী, আ সমস্ত ভূত মে মহাপাতকী কে সেহো মোক্ষদাযিনী ছথি । গঁগা সর জগহ সুলভ অছি, কেরল তীন স্থান পর দুর্লভ মানল গেল অছি - গঁগাদ্বার , প্রযাগ আ গঁগা-সাগর-সঁগম । ওহি ঠাম স্নান করলা সঁ লোকনি সূক্ষ্ম জাযত ছথি আ জে ওহি ঠাম মরৈত ছথি ,ও ফেরি জন্ম নহি লৈত ছথি । জিনকর চিত্ত পাপ সঁ দুষিত ভ২ গেল অছি , এহন জীর আ মনুষ্যক লেল গঁগাক সিরা অন্যত্র গতি নহি অছি । গঁগাক সিরা দোসর কোনো গতি নহি অছি । ভগরান শঁকরক মাথ সঁ নিকলল গঁগা সর পাপক হারিণী আ শুভকারিণী অছি । ও পরিত্র কে সেহো পরিত্র কর২ রালী আ মঁগলময পদার্থক লেল মঁগলকারিণী অছি ।

মনুষ্য সর পাপ সঁ নিঃসঁদেহ মুক্ত ভ২ জাযত অছি । গঁগাক উত্তর তট পর

মানস নাম সঁ তীর্থ অছি। ওহি ঠাম তীন রাতি উপবাস করবা পর সব কামনা পূর্ণ ভঽ জাযত অছি লোকনি গায, ভূমি আ সোনাক দান করবা সঁ জে ফল পাবৈত ছথি, ও এহি তীর্থক রাতি-রাতি স্মরণ করবা সঁ মিল জাযত অছি। জে গঁগা কাত মরৈত ছথি, ও মৃত লোকনি সূক্ষ্ম জাযত ছথি। ও নরক নহি দেখৈত ছথি। মাঘ মাস মে গঁগা আ যমুনাক সঁগম পর ছিআসঠ হজার তীর্থক সমাগম হোযত অছি। বিধি-বিধান এক লাখ গাযক দান করবা সঁ জে ফল মিলৈত অছি, ও মাঘ মাস মে প্রযাগ মে তীন দিন স্নান করবা সঁ মিল জাযত অছি। জে গঁগা যমুনাক মধ্য পঁচাগ্নিক সাধনা করৈত অছি, ও কোনো অঁগ সঁ হীন নহি হোযত ছথি, হুনকর রোগ বেমার দূর ভঽ জাযত অছি আ পাঁচো জ্ঞানেঁদ্রিয সবল রহৈত অছি। এতবে নহি, ওহি মনুষ্যাক শরীর মে জতেক রোম হোযত অছি, ওতেক হজার বরখ ধরি ও সূক্ষ্মলোক মে প্রতিষ্ঠিত রহৈত অছি। যমুনাক উত্তরবারী মহার আ প্রযাগক দক্ষিণবারী মহার পর ঋণপ্রমোচন নাম সঁ তীর্থ স্থান অছি, জে শ্রেষ্ঠ মানল গেল অছি। ওহি ঠাম এক রাতি রুকলা সঁ মনুষ্য সব ঋণ সঁ মুক্ত ভঽ জাযত ছথি। হুনকা সূক্ষ্মলোকক প্রাপ্তি হোযত ছৈন আ সব দিনক লেল ঋণ সঁ মুক্ত ভঽ জাযত ছথি। প্রযাগক মণ্ডল পাঁচ যোজন ধরি পসরল অছি, তাহি মে প্রবেশ করঽ বালা লোকনি ডেগ-ডেগ পর অশ্বমেধ যজ্ঞক ফল পাবৈত ছথি। জে মনুষ্য এহি ঠাম মরৈত ছথি, ও অপন পাছুক সাত পীঢ়ী আ আগুক চৌদহ পীঢ়ী কে তারি দৈত অছি। ই জানি প্রযাগক প্রতি সদিখন শ্রদ্ধা রাখক চাহী। জিনকর চিত্ত পাপ সঁ দূষিত অছি, ও অশ্রদ্ধালু লোকনি এহি স্থান নহি জা পাবৈত ছথি।

যুধিষ্ঠির কহলনি - ধর্মাত্মন্! আই হমর জন্ম সফল ভঽ গেল, আই হমর কুল কৃতার্থ ভঽ গেলাহ। আই অপনেক দর্শন সঁ হম প্রসন্ন ভঽ গেলহুঁ, অনুগৃহিত ছী আ সব পাপ সঁ মুক্ত ভঽ গেলহুঁ। মহামুনে! যমুনাজী মে স্নান করবা সঁ কী পুণ্য মিলৈত অছি, কোন ফল মিলৈত অছি?

মার্কণ্ডেযজী কহলনি - রাজন্! সূর্য কন্যা যমুনা দেবী তীনু লোক মে বিখ্যাত অছি। জাহি হিমালয সঁ গঁগা প্রকট ভেলীহ অছি, তাহি মে যমুনাজীক সেহো আগমন ভেল অছি। সহস্র যোজন দূরস্থ সঁ নামোচারণ করবা পর ও সব পাপ কে নাশ কঽ দৈত ছথিন্। যুধিষ্ঠির! যমুনাজী মে স্নান করবা পর, পানি পিবা পর

আ শ্রনক নামক কীর্তন কবনা সঁ লোকনি পুণ্যক ভাগী ভঽ কল্যাণক দর্শন কবৈত ছথি। যমুনাজী মে গোতা নগেনা আ জল পিনা পব ষ্কনক সাত পীঠী পবিত্র ভঽ জাযত অছি। জে কেও ওহি ঠাম মবৈত অছি, ও পবম গতি পাবৈত ছথি। যমুনাজীক দক্ষিণবাঁবী দিস অগ্নিতীর্থ অছি, পশ্চিম ধর্মবাজক তীর্থ অছি, জেকবা হবরব তীর্থ সেহো কহল জাযত অছি। ওহি ঠাম স্নান কবনা সঁ লোকনি স্বর্গ জাযত ছথি আ মবনা পব ফেবি জন্ম নহি হোযত ছৈন।

এহি প্রকাব যমুনাজীক দক্ষিণবাঁবী কাত কতেকো তীর্থ স্থল অছি। আব হম উত্তববাঁবী কাতক তীর্থক বর্ণন কবৈত ছী। উত্তব দিস মহাত্মা সূর্যক বিবজ নাম সঁ তীর্থ স্থল অছি, জাহি ঠাম ইন্দ্র আদি দেবতা সব দিন সঁক্যোপাসন কবৈত ছথি। দেবতা আ বিদ্বান লোকনি ওহি তীর্থক সেবন কবৈত ছথি। অহাঁ শ্রদ্ধা ভাব সঁ ওহি তীর্থ মে স্নান করু। ওহি ঠাম আওবো কতেকো তীর্থ স্থল অছি, জে সব পাপ কে হবি লৈত অছি। এহি মে স্নান কবনা সঁ মনুষ্য স্বর্গ মে জাযত ছথি আ জিনকব মৃত্যু ওহি ঠাম হোযত অছি, ও মোক্ষ পাবি লৈত ছথি। গঁগা-যমুনা দুনু একহি বঁগ ফলদাযী মানল গেল অছি; কেবল শ্রেষ্ঠতাক কাবণ গঁগা সর্বত্র পূজিত ছথি। জে লোকনি সবেবে উঠি এহি প্রসঁগক পাঠ আ শ্রবণ কবৈত অছি, ও সব পাপ সঁ মুক্ত ভঽ স্বর্গলোক জাযত ছথি।

যুধিষ্ঠিব কহলনি - মুনিবব! হম ব্রহ্মাজী সঁ কহল গেল পুণ্যময় পুবাণক শ্রবণ কেলহুঁ, জাহি মে কতেকো তীর্থক বর্ণন আযল অছি। সব তীর্থ পুণ্যজনক আ পবিত্র বতাওল গেল অছি আ সব সঁ উত্তম গতি মিলৈত অছি। পৃথ্বী পব নৈমিষাবণ্য আ আকাশ মে পুষ্কব তীর্থ পবিত্র অছি। লোক মে প্রযাগ আ কুরুক্ষেত্র দুনুক বিশেষ স্থান দেল গেল অছি। অহাঁ সব তীর্থ মে কেবল একহি টা কেব প্রশঁসা কিএক কঽ বহল ছী? অহাঁ প্রযাগ সঁ পবম দিব্য গতি আ মনোবাঞ্ছিত ভোগক প্রাপ্তি বতাবৈত ছী। থোড়বয় অনুষ্ঠান সঁ বেসী ধর্মক প্রাপ্তি বতাবৈত প্রযাগক বেসী প্রশঁসা কিএক কঽ বহল ছী? হমবা এহি মে সঁশয অছি। এহি সম্বন্ধ মে অহাঁ জে দেখনে আ সুননে ছী, তাহি অনুসাব এহি সঁশযক নিবাবণ করু।

মার্কণ্ডেযজী কহলনি - বাজন্! হম জেহন দেখনে আ সুননে ছী, তেকবে

অনুসাব হম প্রযাগক মাহাত্ম্যে রতারৈত ছী, সুনু ! প্রত্যক্ষ,পবোক্ষ আ জেনা সঁভর হোযত , হম ওকব রর্ণন কবর । শাস্ত্র কেব প্রমাণ মানি আত্মোক পবমাত্মোক সঁগ জে যোগ কএল জাযত অছি , তাহি যোগক প্রশঁসা কএল জাযত অছি । হজাবো জন্মক পুণ্যাঊ মনুষ্য কেব তাহি যোগক প্রাপ্তি হোযত অছি । এহিনা সহস্র যগ মে যোগক উপলব্ধি হোযত অছি । প্রযাগ মে মবলা পব সব কিছু সুলভ ভহ জাযত অছি । জেনা সর স্থত মে ব্যাপক ব্রঁবহ্মক সব জগহ পূজা হোযত অছি, তহিনা রিদ্বান লোকনি প্রযাগক পূজা কবৈত ছথিন । নৈমিষাবণ্য , পুষ্কব,গোতীর্থ, সিন্ধু- সাগব সঁগম , কুরুক্ষেত্র, গযা আ গঁগাসাগব আওব কতেকো তীর্থ র পরিত্র পর্রত - সর মিলা কেব তীস কোটী সদ হজাব তীর্থ প্রযাগ মে সদি খন বহৈত অছি ।এহন রিদ্বানক কথন অছি । ওহি ঠাম তীন টা অগ্নিকুণ্ড অছি , জেকবা মধ্য গঁগা প্রযাগ সঁ রঁহৈত ছথিন । ও সব তীর্থ সঁ যুক্ত অছি । রাম দেরতা দেরলোক,স্থলোক আ অন্তবিক্ষ মে সাঠে তীন কোটী তীর্থ রতোননি অছি । গঁগা কেব হুনকা সর্রঁহক সুকল মানল গেল অছি । প্রযাগ , প্রতিষ্ঠানপুব ,কম্বল আ অশ্বতব নাগক স্থান আ ভোগরতী - এ প্রজাপতিক রেদী অছি । ওহি ঠাম দেরতা ,মূর্তিমান যজ্ঞ আ তপস্বী ঋষি লোকনি বহৈত ছথি আ প্রযাগক পূজা কবৈত ছথি । প্রযাগক এ মাহাত্ম্যে ধন্য অছি , জএহ সুক্ষ প্রদাতা , সেরিত,স্বখকপ, পুণ্যমময়, নীক ,উত্তম,ধর্মানুকূল আ পারন অছি ।এ মহর্ষি লোকনিকক গোপনীয বহস্য অছি , জে সর পাপ কেব নাশক অছি ।এহি প্রসঁগ কেব পাঠক দ্বিজ সর পাপ সঁ বহিত ভহ জাযত ছথি ।

ব্রঁবহ্মা , রিষ্ণু আ মহাদের - এ তীন দেরতা সরহক প্রভু আ অরিনাশী ছথি । ব্রঁবহ্মা এহি সমস্ত জগতক , এহি ঠামক চবাচব জীরক সৃষ্টি কবৈত ছথিন আ পবমেশ্বব রিষ্ণু হুনকা পালন কবৈত ছথিন । ফেবি কল্পক অন্ত মে ভগরান রুদ্র সমস্ত জগতক সঁহাব কবৈত ছথিন । এ ব্রঁবহ্মা,রিষ্ণু আ মহাদের প্রযাগ মে সদিখন বহৈত ছথিন । প্রযাগ মণ্ডলক রিস্তাব পাঁচ যোজন অছি । সর দেরতা পাপ কর্মক নিরাবণ কবৈত এহি মণ্ডলক বক্ষাক লেল ওহি ঠাম বহৈত ছথিন ।

******

२.३.प्रणव झा-परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसंधान निदेशालय के प्रदर्शनी



प्रणव कुमार झा

परमाण ुखनिज अन्वेषण एव ंअनसुधांन निदशोलय के प्रदशनी

वर्तमान युग आ आबय बला युग ऊर्जा, डिजिटल, क्वान्टम, नैनोचिप आदि के उपयोग आ उपभोग से भरल युग अछि। अतः ऐ के लेल नाभिकीय क्षेत्र मे उपभुक्त पदार्थ आ दुर्लभ अर्थ माटेरियल के शोध एवं अन्वेषन एकटा महत्वपूर्ण पहलू छैक। ऐ संदर्भ मे फरवरी के महीना मे हमरा एकटा रुचिगर अनुभव प्राप्त भेल । एकटा सम्मेलन मे जयपुर जेबाक अवसर भेटल, जे अपन ऐतिहासिक धरोहर आओर गुलाबी नगरी के नाम स जानल जाय अछि। जयपुर कन्वेंशन सेंटर में आयोजित एकटा प्रदर्शनी में हमरा परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसंधान निदेशालय (Atomic Minerals Directorate for Exploration and Research - AMD) के कार्य के लग से देखबाक अवसर भेटल। ई प्रदर्शनी नै खाली खनिज आओर ओकर अन्वेषण के तकनीकी दुनिया से लोक के परिचय करा रहल छल, बल्कि इहो याद दिया रहल छल जे विज्ञान आओर मानव जिज्ञासा मिलिकऽ प्रकृति के रहस्य के उजागर करैत अछि आ कोना मनुष अपन सभ प्रकार के आवश्यकता के पूर्ति कोनो ने कोनो रुपे प्रकृति से कऽ रहल अछि। ई यात्रा वृत्तांत ओहि याद के समेटने अछि, जाहि में हम खनिज के

सैंपल, ओकर उद्गम स्थल, अन्वेषण विधि आओर संस्था के संगठनात्मक ढांचा के बारे में जानलहुँ, आओर ई सेहो महसूस कएलहुँ जे एहन प्रदर्शनी युवा पीढ़ी में वैज्ञानिक चेतना के जागृत करबाक में प्रभावशाली भऽ सकैत अछि।




Health
Sand


About AMD
ATOMIC MINERALS
DIRECTORATE
FOR EXPLORATION
& RESEARCH




PARTMENT OF ATOMIC ENERGY
TOMIC MINERALS
IRECTORATE
OR EXPLORATION
& RESEARCH
1909 - 196
परमाणु ऊर्जा विभाग
परमाणु खनिज अन्वेषण ए
अनुसंधान निदेशालय
AMD
यूरेनियम अन्वेषण चरण

बसंत ऋतुक रमनगर बसात आओर सूरजक हल्लुक रौदक बीच ई विशाल आयोजन स्थल लोक के चहल-पहल से भरल छल। आयोजन स्थल पर बहुते रास संस्थान सबहक प्रदर्शनी लागल छल। एक एक कऽ के ओय प्रदर्शनी के देखईत हम एकटा संस्थान के प्रदर्शनी स्थल पर पहुंचलहु जेकर द्वार पर लागल बैनर पर लिखल छल - "परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसंधान निदेशालय: जो ढूँढते हैं - वही पाते हैं"। ई पढ़िते हमर मन में उत्सुकता जागल जे कनी ऐ संस्था आ प्रदर्शनी मे लगाओल सैंपल सबहक विषय मे किछु जानल जाय।

अंदर एकटा व्यवस्थित प्रदर्शनी लागल छल। स्टॉल के कतार में चमकैत खनिज सैंपल, रंग-बिरंग चार्ट, मॉडल आदि के माध्यम से जानकारी देल जा रहल छल। ओतुक्का 2-3 टा युवा वैज्ञानिक के टीम उत्साह के साथ आगंतुक के स्वागत कऽ रहल छल। एकटा युवा वैज्ञानिक मुस्कुराइत हमरा अभिवादन केलाह। हमहू प्रतिउत्तर मे अभिवादन करैत कहलहु जे हम प्रदर्शनी मे लगाओल गेल सैंपल आ संस्थान के काज के विषय मे जिज्ञासा राखै छी। कि ओ हमरा ऐ सभ विषय मे किछु संक्षिप्त जानकारी दऽ सकय छैथ?

ओ हामी भरइत सर्वप्रथम संस्था के बारे में बतौलनि। परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसंधान निदेशालय, जे संक्षेप में AMD(पखनि) कहल जाइत अछि, भारत सरकार के परमाणु ऊर्जा विभाग (Department of Atomic Energy - DAE) के अंतर्गत कार्यरत एकटा प्रमुख संगठन अछि। एकर स्थापना 1948 में भेल छल, जखन एकरा 'रेयर मिनरल्स सर्वे यूनिट' के नाम से जानल जाइत छल। समय के साथ एकर नाम आओर स्वरूप बदलैत गेल, आओर 1998 में एकरा वर्तमान नाम भेटल। एकर मुख्यालय हैदराबाद में अछि, आओर देशभर में एकर सात क्षेत्रीय केंद्र अछि, जै में जयपुर सेहो सम्मिलित अछि।

AMD के मुख्य उद्देश्य परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम के लेल आवश्यक खनिज, विशेष रूप से यूरेनियम आओर थोरियम, के खोज आओर अन्वेषण करब अछि। वैज्ञानिक जी बतेला जे ई संस्था नै खाली खनिज के खोज करैत अछि, बल्कि ओकर भूगर्भीय अध्ययन, विश्लेषण आओर उपयोगिता के समझबा में सेहो महत्वपूर्ण योगदान दैत अछि। संगठन के ढांचा बहु-आयामी अछि, जै में भूवैज्ञानिक, भू-भौतिकी विशेषज्ञ, रसायनज्ञ, इंजीनियर आओर ड्रिलिंग विशेषज्ञ के टीम शामिल अछि। ई सभ मिलिकऽ देश के विभिन्न हिस्सा में खनिज भंडार के पहचान आओर ओकर दोहन के प्रक्रिया मे लागल अछि अछि।

खनिज सैंपल के संग्रह प्रदर्शनी के आकर्षक हिस्सा छल। कांच के डिब्बा में विभिन्न रंग आओर आकार के खनिज सबहक सैंपल रखल छल ।वैज्ञानिक जी हमरा बतौलनि जे एकरा में से कै टा सैंपल राजस्थान के विभिन्न खदान से निकालल गेल छल, जे ई क्षेत्र के समृद्ध भूगर्भीय विरासत के दर्शबैत अछि। संगे मे एकटा यंत्र सेहो राखल छल जे रेडियोएक्टिविटी के मात्र मे मापय छल। ऐ ठाम बतबैत चली से काँच रेडियोएक्टिविटी के poor conductor होइत छैक ताहि से रेडियो एक्टिव पदार्थ सभ के सुरक्षा के दृष्टि से एहने कुचालक काँच के अंदर रखल जाय छैक। हमरा आग्रह पर ओ कनी काल लेल यूरेनियम खनिज सैंपल के काँच के बाहर केलाह त देखल जे यंत्र के रीडिंग भागय लगल। ओ हमरा एक-एक कऽ के ई सैंपल के विषय मे संक्षिप्त मे बतौलनि।

- लपिडोलाइट: ई हल्का बैंगनी रंग के चमकैत खनिज छल, जे राजस्थान के भीलवाड़ा जिला से लाओल गेल छल।वैज्ञानिक जी बतौलनि जे लेपिडोलाइट में लिथियम के नीक मात्रा होइत अछि, जे आधुनिक बैटरी उद्योग, विशेष रूप से इलेक्ट्रिक वाहन के लेल अत्यंत महत्वपूर्ण अछि। एकर परतदार संरचना आओर चमक एकरा अनोखा बनबैत अछि।

- फ्लोराइट: ई उदयपुर के नजदीक के खदान से प्राप्त भेल छल। एकर पारदर्शी आओर चट्टानी रूप आकर्षक छलैक।हमरा बताओल गेल जे फ्लोराइट के उपयोग औद्योगिक प्रयोजन, जेना एल्यूमीनियम उत्पादन आओर डेंटल उत्पाद में, होइत अछि।

- पिंचब्लडें: पिचब्लेंड यूरेनियम केरऽ प्राथमिक अयस्क छेक । ई रेडियोधर्मी खनिज छै आ एकरा यूरेनिनाइट के नाम से सेहो जानल जाय छैक । पिचब्लेंड केरऽ रंग कारी होय छै आ एकरा मं यूरेनियम ऑक्साइड पाओल जाय छैक ।

� सकेंडरी यरूेनियम खनिज: सेकेंडरी यूरेनियम खनिज ओ खनिज छै जे प्राथमिक यूरेनियम खनिज के कटाव या परिवर्तन सं बनैत छै। ई सैंपल झुंझुनू जिला के एकटा खादान से प्राप्त भेल सैंपल छल। वैज्ञानिक जी बतौलनि जे ई यूरेनियम के एकटा रूप अछि जे सतही जल के संपर्क में अबिते परिवर्तनशील रूप में परिवर्तित भऽ जाइत अछि। शोध मे एकर उपयोग छैक। कोनो खादान मे एकर सैंपल भेलटा पर ओय क्षेत्र मे यूरेनियम खनिज भेटबाक संभावना प्रस्फुटित होइत छैक। ई भारतक परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम लेल आवश्यक स्रोत सभ में सँ एक अछि।

� थोराइट: थोरियम-समृद्ध ई खनिज माउंट आबू के क्षेत्र से प्राप्त भेल छल। एकर काला आ चमकदार रूप अत्यंत आकर्षक छल। थोरियम भविष्य में परमाणु ऊर्जा उत्पादन में वैकल्पिक स्रोत के रूप में उपयोग कएल जा सकैत अछि। AMD एकरा पर सेहो गहन अनुसंधान कऽ रहल अछि।

� डेविडाइट: ई कारी-भूरा रंगक भारी खनिज छल, जे बांसवाड़ा इलाकासँ आनल गेल छल । एकरा मे यूरेनियम के संग-संग टाइटेनियम सेहो भेटय

छैक, जेकरा चलतें ई औद्योगिक आ वैज्ञानिक अनुसंधान लेल उपयोगी होइत छैक ।

- ग्रफोइट शिस्ट: ई चमकैत कारी रंगक छल आ उदयपुरक खदानसँ निकालल गेल छल । जखन हम ओकरा छुलहुँ तऽ स्पर्श मे चिक्कन छल । ग्रेफाइट कें उपयोग पेंसिल, बैटरी आ चिकनाई उद्योग मे कैल जायत छै। एकर परतदार संरचना देखि हम प्रभावित भेलहुं।
- गानर्टे: ई लाल-भूरा रंगक नमूना अजमेर इलाकाक छल । गार्नेट के उपयोग गहना में सजावट के लेल आ घर्षण सामग्री के रूप में कयल जाइत अछि |
- मोनाजाइट: ई पीयर-भूरा रंगक बालु के रूप में छल, जे राजस्थान के किछु सीमांत क्षेत्र सं लेल गेल छल। ऐ मे थोरियम छै, जे भविष्य केरऽ परमाणु ऊर्जा केरऽ संभावित स्रोत छै ।
- अन्य दुलर्भ रते: एहि मे जिरकोन आ इलमेनाइट सन खनिज शामिल छल जे राजस्थानक खनिज समृद्ध इलाका स आयल छल। गहना में जिरकोन आ टाइटेनियम डाइऑक्साइड के उत्पादन में इलमेनाइट के प्रयोग होइत अछि |

हम जखन यूरेनियम के प्राथमिक अयस्क से यूरेनियम के उत्पादन के बाद एकर रुपया के स्वरूप मे मूल्य पुछलहु त वैज्ञानिकजी मुस्कियाइत बजलाह जे अहाँ जानिते हेबय जे एखन भारत यूरेनियम के लेल अधिकांशतः आयात पर निर्भर छैक। ई ऊर्जा आ सामरिक रुपे एकटा अति महत्वपूर्ण पदार्थ थीक। ताहि दुआरे पाई से अधिक महत्वपूर्ण अछि उपलब्धता। मानि लेल जाय जे कोनो जियोपोलिटिकल कारण से देश मे यूरेनियम आयात बंद भऽ जाय तखन की होय। ताहि दुआरे हमर संस्थान के प्रमुख लक्ष्य छैक देश के विभिन्न भूगर्भिय भाग मे एकर अन्वेषण।

खनिज करे पहचान प्रक्रिया

आगा वैज्ञानिक जी खनिज सैंपल के परख करबाक वैज्ञानिक तरीका बतौलनि। ओ कहलक जे खनिज केर पहचान केवल ओकर रंग या बनावट से नहि होइत अछि, बल्कि ओकर घनत्व, रेडियोधर्मिता, क्रिस्टल संरचना आ रासायनिक गुण के जाँच सेहो करल जाइत अछि। स्टॉल पर एकटा छोट जिओलॉजिकल किट छल जेकरा में मैग्नेट, लघु रेडिएशन डिटेक्टर, लुइप (लेंस), आ टेस्टिंग केमिकल्स छल। हमरे सामने ओ एकटा छोट सैंपल पर रेडियोधर्मिता मीटर लगेलनि, जे तुरत बीप देलक - ई देखिकऽ हम बहुत रोमांचित भऽ गेलहुँ। वैज्ञानिक जी कहला-ई खनिज रेडियोधर्मी अछि, आ एहि कारण एकर उपयोग आ निष्कासन के समय विशेष सुरक्षा अपनाओल जाइत अछि।

सस्थान के सगंठनात्मक ढाँचा

आगा हमरा बताओल गेल जे AMD के मुख्यालय हैदराबाद में अछि, आओर देशभर में एकर सात टा क्षेत्रीय केंद्र कार्यरत अछि- जयपुर, नागपुर, बैंगलोर, शिलॉंग, जमशेदपुर, लखनऊ आ हैदराबाद। प्रत्येक केंद्र अपन-अपन क्षेत्र के भूगर्भीय स्थिति के अनुसार कार्य करैत अछि। संस्था में सैकड़ों वैज्ञानिक, तकनीशियन आ इंजीनियर कार्यरत छैथ। भूगर्भ वैज्ञानिक (Geologists) चट्टान आ खनिज के बनावट के अध्ययन करैत छैथ, भूभौतिकी विशेषज्ञ (Geophysicists) पृथ्वी के अंदर के संरचना के पता लगबैत छैथ, आ रसायनज्ञ खनिज के रासायनिक गुण के विश्लेषण करैत छैथ। ई सब मिलिकय संयुक्त टीम बना कऽ खनिज के खोज, विश्लेषण, आ रिपोर्टिंग करैत छैथ।

ड्रिलिंग आ अन्वेषण के तकनीक

आगा एकटा छोट, पारदर्शी एक्रेलिक मॉडल के माध्यम से ई देखावल जा रहल छल जे कोना गहराई में ड्रिलिंग कऽ कऽ खनिज निकालल जाइत अछि। ड्रिलिंग एकटा अत्यंत कठिन आ खर्चीला प्रक्रिया होइत अछि, लेकिन AMD अत्याधुनिक मशीनरी आ GPS आधारित तकनीक के प्रयोग करैत अछि, जै सँ गहराई तक सटीकता से खनिज के उपस्थिति के पता लगाओल जाइत अछि।

हमरा बताओल गेल जे अन्वेषण के लेल 300 सँ 800 मीटर धरि ड्रिलिंग करय पड़ैत अछि। एकरा लेल योजना, अनुमति, संसाधन आ टीमवर्क के जबरदस्त समन्वय चाही।

यरूेनियम अन्वषेण चरण: चार्ट के माध्यम स ेसमझ

प्रदर्शनी मे एकटा चार्ट सेहो लागल छल (संलग्न फोटो देखू) जै मे यूरेनियम केर खोज के प्रक्रिया के देखायल गेल छल । ओ हमरा बुझेबाक लेल कहलनि जे यूरेनियम के खोज ई सब चरण में होयत छैक:

1. भौतिकी सवर्क्षेण (Geological Survey): ई प्रक्रिया भौतिक सर्वेक्षण सं शुरू होय छै, जेकरा मे संभावित क्षेत्र केरऽ चट्टान आ माटि के अध्ययन करल जाय छै । एकरा चार्ट पर "भौतिकी सर्वेक्षण क्षेत्र अभियान" के रूप में देखाओल गेल छल | ई कदम भूवैज्ञानिक द्वारा जमीन केरऽ संरचना कं समझै लेल कैल जाय छै ।

2. मटोलिट डेटा के विश्लषेण (Metallite Data Analysis): एकर बाद डाटा एनालिसिस करल जाय छै, जेकरा मं पहलं सं उपलब्ध भू-रासायनिक आ भूभौतिकीय डाटा के

अध्ययन करल जाय छै । इ स्टेप खनिज कें संभावित उपस्थिति कें अनुमान लगबय मे मदद करय छै।

3. क्षत्रीय प्रारंभिक अभियान (Field Preliminary Survey): एहि चरण मे फील्ड मे जा कऽ नमूना एकत्रित कैल जाइत अछि । एतय गामा-रे स्पेक्ट्रोमीटर सन उपकरण के प्रयोग कयल जाइत अछि।

4. अनशुीलन आ मल्यूांकन (Exploration and Evaluation): एकर बाद खोज शुरू भऽ जाय छै, जेकरा मं ड्रिलिंग आ गहन सर्वेक्षण शामिल छै ।

5. चनुल साइट पर बायोफिजिकल सर्वे (Biophysical Survey at Selected Site): चयनित स्थल पर विस्तृत सर्वेक्षण कैल जायत छै, जेकरा मे माटी, पानी आ चट्टान कें रेडियोमेट्रिक विश्लेषण शामिल छै।

6. रेडियोमट्रिक सर्वे और मापांक (Radiometric Survey and Mapping): आगा रेडियोमेट्रिक सर्वेक्षण आ मैपिंग करल जाय छै, जै मे खनिज भंडार केर सही स्थान आ विस्तार के पता चलै छै ।

वैज्ञानिक जी बतेला जे ई प्रक्रिया व्यवस्थित आ वैज्ञानिक अछि, जाहि सं पर्यावरण के कम सं कम नुकसान पहुंचेने खनिज के खोज सुनिश्चित कैल जाय अछि। चार्ट देखला पर हमरा बुझायल जे यूरेनियम के खोज कतेक जटिल आ तकनीकी रूप सं उन्नत अछि।

ई सब देखैत सुनैत मोन मे विचार आयल जे एहन प्रदर्शनी केवल सूचनात्मक नहि, बल्कि प्रेरणादायक सेहो होइत अछि - विशेष रूप सँ ओहि युवा वर्ग लेल जे देशक भविष्य गढ़ऽ चाहैत अछि। हम वैज्ञानिक जी के धन्यवाद दैत कहलहु जे अहाँ बड्ड निक जेकाँ सबटा बात बतेलहु यद्यपि किछू बात भेजा मे घुसल किछु नई घुसल (जे घूसल आ याद रहल ओहि आधार पर ई संस्मरण लिखबाक ठानलहु)। यदि अहाँ सब एहन प्रदर्शनी स्कूल-कॉलेज सब मे लगाबि त कईएक टा बच्चा सभ ऐ से लाभान्वित भऽ सकय छैथ आ ऐ क्षेत्र मे अपन करियर के लेल दिशा मोड़ि सकय छैथ। ऐ पर ओ कहला जे संस्थान कखनो के एहन प्रदर्शनी सभ स्कूल सभ मे सेहो लगाबय अछि। तखन वैज्ञानिक जी से विदा लैत हम सम्मेलन कक्ष दिस विदा भेलहु।

- प्रणव कुमार झा [राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड, नई दिल्ली]

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

पद्य

३.१.प्रणव कुमार झा- आशाक आकाश

३.२.जगदानन्द झा 'मनु'-२५ टा हाइकू

३.३.डॉ. जियाउर रहमान जाफरी- दूटा कविता- मृतक/ पुरुषक समस्या

३.१.प्रणव कुमार झा- आशाक आकाश



प्रणव कुमार झा

आशाक आकाश

सून्न आँखि मे आब तऽ अबैतो नहिं अछि नीर,
के सुनत, केकरा कहू हम अपन मोनक पीर?

आशाक दीप जरैत रहय छल कहियो जे निशि-दिन,
मिझा गेल मोनक आँगन मे , भेल मलिन आ क्षीण।

प्राती के जे स्वर उठैत छल हमर मनक मन्दिर मे,
मौन पड़ल अछि कुंठित भऽ कऽ, रुद्ध कंठक स्वर मे।

प्रणय-पुष्प फुलायल छल जे प्रेमक ऋतु बसंत,
पतझर मे ओ झरि गेल अछि, भेल करुणे अंत।

दूर सुनाइ पड़ै अछि ई केकर करुण रुदन?
किएक राधा केँ जग मे नहि भेटै छथि मदन?

हमर मोनक मूक व्यथा तोरे स्वागत कऽ लय छी,
पीड़क पातक ठाढि के अपन मुट्ठी मे धऽ लय छी ।

मनुष नहिं जे जीबि रहल बस बनि के जिंदा लाश,
घोर निराशा मे सेहो खोजैय ओ आशाक आकाश।

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.२.जगदानन्द झा 'मनु'-२५ टा हाइकू



जगदानन्द झा 'मनु'

२५ टा हाइकू

१

बिन तेलकेँ

लालटेन बारने

इजोत कोना

२

झहरल छी

बेजान नै अखनो

पल्लव एतै

३

माय हमर

करेज लगोलनि

जेबी देख कऽ

४

पैसा खतम

सब अनचिंहार

बुझैत देरी

५

नून रोटी खा

ओ तँ पोसि लेलनि

पाँचों भांइकेँ

६

नोकरी गेल

असगर भ गेलौँ

खाली गाममे

७

भोजमे सब

काठी बेर कियो नै

राम हो राम

८

चारि दिनक

अन्हरिया आएल

सब चिन्हलौं

९

तमाशा देख

किए नोर पोछत

कलियुगमे

१०

पघि जेठक

नै मर्यादा रहल

सभ्यता इहे

११

यशस्वी रहू

आँखि जुराएल

बौआकेँ देखि

१२

धन अभावे

परिवारोसँ भेल

बेनाम लोक

१३

मुइला पर

भीड़ जमा भ गेल

सम्पत्ति लेल

१४

नोटक गंध

केलकै आकर्षित

बेटावलाकेँ

१५

शिक्षा संस्कार

सरकारी नोकरी

लग छै फीका

१६

नीक लगै छै

अनकर तीमन

भोजक अन्न

१७

तिला संक्रांति

तीर्थ डूबकी स्नान

तिलबा लाई

१८

चुड़ा मुरही

तिलबा चुड़लाई

सब भेटत

१९

तिल चाउर

बेटा पोता बहतै

बेटी किए नै

२०

जीवन भरि

तिल बहले बेटी

बिन हिस्साकेँ

२१

नै सुरक्षित

पुरुष राजमे स्त्री

कतौ बाहर

२२

असुरक्षित

स्त्री राजमे पुरुष

घर घरमे

२३

बिन सिखने

आगिसँ खेलबै तँ

हाथ पाकत

२४

हारल मोन

आ मिझा गेल आगि

कोन काजक

२५

एक्के रेलमे

स्वर्ग नर्क दुनू छै

दाम हिसाबे

- जगदानन्द झा 'मनु', मोबाइल नंबर ९२१२४६१००६

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.३.डॉ. जियाउर रहमान जाफरी- दूटा कविता- मृतक/ पुरुषक समस्या



डॉ. जियाउर रहमान जाफरी

दूटा कविता- मतृक/ परुुषक समस्या

1.
मतृक

अहाँक घर मे
आगि लागल अछि
अहाँ किछु नहि बजलहुँ
बेटी सभ केँ लऽ गेल
अहाँ कोनो प्रतिक्रिया नहि केलहुँ
कुम्बाक गारि पड़ल
अहाँ किछु नहि बजलहुँ
अहाँक घर

अहाँक पूजा स्थल
अहाँक दोकान सभ टूटि गेल अहाँ चुप रहि गेलहुँ
वास्तव मे
मरल मनुक्ख एकदम चुप भ' जाइत अछि...

2.
परुषक समस्या

पुरुष कैँ
सेहो सदिखन समस्या होइत छैक
ओतय जिनगी मे
कोनो स्वतंत्रता नहि छैक
ताना कसैत अछि
एकटा दरबज्जा पर बैसल माँ
सदिखन कहैत छथिन
जहिया सँ पुतहु घर आबि गेल छथि
विरक्त भ गेल बेटा
बेटा बहिन सभ सेहो परेशान छल
सब हमरा से चाहैत अछि धन ओकरा लगैत अछि
धन-दौलत अछि हमरा पास...
जँ हम अपन पत्नी कैँ नहि स्वीकार करब
त' ओ हमरा फँसा देतीह
त' ओ हमरा पर केस दायर क' लेतीह
हमर चिता के टुकड़ा भ जायत
हम एक व्यक्ति छी

मुदा हम कतेको मे रहैत छी
ओकरा बादो केकरो उम्मीद पे
खड़ा नहि उतरि रहल छी...

ग्राम पोस्ट-माफ़ी, वाया-अस्थावां, ज़िला-नालंदा, बिहार 803107
9934847941 zeaurrahmanjafri786@gmail.com

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।